भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी भाषा की विकास यात्रा

संस्कृति सिन्हा[1] & निशा जैन[2]

[1]छात्रा, स्नातक (प्रथम वर्ष), महाविद्यालय-क्राइस्ट एकेडमी इंस्टिट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीज़.

[2]हिंदी सहायक प्रोफेसर, कला और मानविकी संकाय, महाविद्यालय-क्राइस्ट एकेडमी इंस्टिट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीज़.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15796036

ABSTRACT:

भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा में भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हिंदी भाषा का उद्भव वैदिक संस्कृत की वाचिक परंपरा से जुड़ा है, जहाँ वेदों, उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रंथों का मौखिक रूप से संरक्षण हुआ। उस समय ज्ञान को श्रुति परंपरा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जाता था। गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से यह मौखिक ज्ञान आगे बढ़ता रहा और समाज में ज्ञान का प्रसार होता रहा। समय के साथ संस्कृत से सरल भाषाओं की ओर संक्रमण हुआ। प्राकृत, पाली और अर्द्धमागधी भाषाओं ने ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाने में सहायता की। बौद्ध और जैन धर्मों के प्रचार में इन भाषाओं का विशेष योगदान रहा। इनसे अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ, जो हिंदी के प्रारंभिक स्वरूप का आधार बनीं। वाचिक परंपरा में इन भाषाओं ने जनता के बीच भक्ति, ज्ञान और दर्शन को सरलता से पहुँचाया।

हिंदी का लिखित विकास 10वीं से 12वीं शताब्दी के अपभ्रंश साहित्य से हुआ। अमीर खुसरो ने हिन्दवी में रचनाएँ कर हिंदी के लिखित रूप को प्रारंभिक पहचान दी। भक्तिकाल (14वीं-17वीं सदी) में तुलसीदास, सूरदास और कबीर ने अवधी, ब्रज और खड़ी बोली में काव्य रचनाएँ कीं, जिससे हिंदी का व्यापक प्रसार हुआ। रीतिकाल में हिंदी साहित्य में शृंगारिकता प्रमुख रही। आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद ने हिंदी को सामाजिक सुधार, यथार्थवाद और राष्ट्रीय चेतना का माध्यम बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी ने जनजागरण का कार्य किया। आज हिंदी साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और मीडिया की एक सशक्त भाषा है। इस प्रकार हिंदी भाषा भारतीय अस्मिता और ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर है।

KEYWORDS:

पौराणिक भाषाएं, संस्कृत भाषा, आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल, शिक्षा, तकनीक, प्रभाव– राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक.

आज भारत ही नहीं वरन विश्व में हिंदी भाषा का बोलबाला है। आज के समय में हिंदी एक लोकप्रिय भाषा है और विश्व भर में बोली जाती है। "हिंदी हमारी राष्ट्रीयता की भाषा है। यह हमारी राजभाषा तो है ही हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत की वाहिका भी है।"[1] यह भाषा भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न हिस्सा है। पर इसका उद्भव और विकास कैसे हुआ? भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी भाषा एक दूसरे से काफी गहराई से जुड़े हुए हैं। हिंदी भाषा का विकास भारतीय भाषाओं के विकास क्रम में एक बहुत महत्वपूर्ण कड़ी है, जो प्राचीन संस्कृत भाषा से अपभ्रंश और फिर प्राकृत भाषा से होकर हिंदी तक पहुँचा है। हिंदी भाषा का भारतीय समाज संस्कृति अथवा साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है, और आज यह भारत की सांस्कृतिक पहचान बन गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में हिंदी भाषा के उद्भव और विकास का एक जटिल और समृद्ध इतिहास है।

पौराणिक भाषा से हिंदी भाषा का संबंध:

भारत में हिंदी भाषा एक महत्वपूर्ण भाषा है, सिर्फ वार्तालाप की दृष्टि से ही नहीं बल्कि पठन-पाठन के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है, जिस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा में हर विषय के पठन-पाठन के लिए संस्कृत भाषा महत्वपूर्ण थी ठीक उसी प्रकार आज हम हिंदी में हर विषय को पढ़ सकते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी भाषा में बड़ा ही गहरा और ऐतिहासिक संबंध है। भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण, महाभारत, आयुर्वेद, दर्शन, गणित और खगोलशास्त्र जैसे क्षेत्रों में विकास करती रही है। यह सब ग्रंथ मूलतः संस्कृत भाषा में रचे गए थे जिन्हें वर्तमान में हिंदी भाषा में जन-जन तक पहुँचाया। हालाँकि इनका मूल रूप आज भी विद्यमान है।

संस्कृत:

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा की पौराणिक भाषा संस्कृत रही है। भारत के सभी अमूल्य तथा महत्वपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में ही लिखे गए हैं। संस्कृत भाषा को देवनागरी कहा जाता है, क्योंकि यह भारतीय ऋषियों द्वारा ध्यान और तपस्या के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को व्यक्त करने का माध्यम बनी। भारतीय संस्कृति, दर्शन और मूल्य संस्कृत गद्य में संरक्षित है जिनके माध्यम से ज्ञान की परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ी है।

1. हिंदी भाषा के विकास में संस्कृत का प्रभाव

हिंदी भाषा पर संस्कृत का अत्यंत गहरा और व्यापक प्रभाव रहा है। संस्कृत भाषाओं की जननी मानी जाती है और हिंदी की जड़ें भी संस्कृत से हैं। संस्कृत न केवल प्राचीन भारत की धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक भाषा रही है, बल्कि यह भारतीय भाषाओं के लिए एक मजबूत आधार भी बनी है। हिंदी भाषा की जड़ें संस्कृत में इतनी

गहराई से समाई हुई हैं कि इसके शब्द, व्याकरण, वाक्य विन्यास और साहित्य सभी पर संस्कृत की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

I. शब्दों का प्रभाव

हिंदी में उपयोग होने वाले हजारों शब्द संस्कृत से आए हैं। इन शब्दों को तत्सम शब्द कहा जाता है। उदाहरण - ज्ञान, प्रेम, धर्म, शक्ति, सत्य, मित्र, विश्व, नयन आदि। इसके अलावा संस्कृत से परिवर्तन होकर आए तद्भव शब्द भी हिंदी में बहुतायत में मिलते हैं। उदाहरण - अग्नि - आग, कृष्ण- कान्हा, माता - माँ आदि। इससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी की शब्द निधि संस्कृत पर बहुत अधिक निर्भर है।

II. व्याकरणिक प्रभाव

हिंदी के व्याकरण भाग पर भी संस्कृत का प्रभाव है। हिंदी में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, काल, लिंग, वचन, कारक आदि की व्यवस्था संस्कृत की पद्धति पर आधारित है। भले ही हिंदी का व्याकरण तुलनात्मक रूप से सरल है, लेकिन उसकी मूल संरचना संस्कृत से ही निकली है।

III. साहित्यिक प्रभाव

हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों में संस्कृत की शैली, छंद और अलंकारों का प्रयोग दिखाई देता रहा है। अनेक कवियों ने जैसे तुलसीदास, सूरदास, रहीम आदि अपनी रचनाओं में संस्कृत से प्रभावित शब्दों और विचारों का प्रयोग किया है। तुलसीदास की 'रामचरितमानस' में संस्कृत के अनेक श्लोकों और शब्दों का समावेश है। संस्कृत काव्य परंपरा और दर्शन ने हिंदी साहित्य को गहनता और उच्च स्तर प्रदान किया है।

IV. आधुनिक हिंदी और संस्कृत:

आधुनिक काल में भी हिंदी में तकनीकी, शासकीय और औपचारिक कार्यों के लिए तत्सम (संस्कृत) शब्दों का प्रयोग अधिक होता है। उदाहरण के लिए शासन, संविधान, न्याय, स्वतंत्रता, शिक्षा, विज्ञान आदि शब्द संस्कृत से लिए गए हैं।

2. प्राकृत और अपभ्रंश:

संस्कृत भाषा से प्राकृत और अपभ्रंश भाषाएँ विकसित हुईं। अपभ्रंश हिंदी भाषा के उद्भव के आधारशिला थी। इसी काल में कई क्षेत्रीय बोलियों का भी विकास हुआ, और हिंदी भाषा भी उनमें से एक थी। हिंदी का उद्भव प्राकृत भाषा से हुआ, यह एक प्राचीन आर्य भाषा थी, और इसी प्राकृत से अपभ्रंश नामक भाषा भी विकसित हुई।

अपभ्रंश की एक अंतिम अवस्था को अवहट्ट कहा जाता है और इसी अवहट्ट से विकसित हुई हिंदी भाषा। हिंदी भाषा के विकास का आदिकाल 1000 ई. से 1500 ई. तक का माना जाता है।

लोक भाषा का विकास:

प्राचीन काल में विभिन्न धार्मिक और सामाजिक आंदोलन हुए, और इन्हीं आंदोलनों के दौरान बहुत से अलग-अलग लोक भाषाओं का प्रयोग हुआ। हिंदी भी एक ऐसी ही लोक भाषा थी, जिसे जनता ने व्यापक रूप से स्वीकार किया।

साहित्यिक विकास:

मध्ययुगीन काल हिंदी साहित्य के लिए स्वर्णिम काल रहा। इसी काल में हिंदी साहित्य का विस्तार हुआ, और हिंदी साहित्य ने एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। इस काल में होने वाले आंदोलन जैसे- भक्ति आंदोलन, सूफी आंदोलन और अन्य धार्मिक तथा सामाजिक आंदोलन ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाया। इसी काल में कई प्रसिद्ध कवि और लेखक उभरे जिन्होंने हिंदी भाषा को एक साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित किया और इसे एक नया आयाम दिया।

आधुनिक हिंदी:

आधुनिक काल में हिंदी भाषा में और भी विकास हुआ है। आज शिक्षा, पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में इसका प्रयोग बढ़ा है और अब हिंदी न सिर्फ भारत की प्रमुख भाषा है बल्कि इसे दुनिया भर में भी पहचान मिली है।

हिंदी भाषा का उद्भव

हिंदी शब्द अपने व्यापक अर्थ में हिंदी प्रदेशों में बोली जाने वाली 17 बोलियों का द्योतक है। इसके अंदर ब्रज, अवधी, कन्नौजी, मैथिली, खड़ी बोली आदि लोक भाषाएं आती हैं। भाषा विज्ञान प्रायः 'पश्चिमी हिंदी' और 'पूर्वी हिंदी' को ही हिंदी मानते रहे हैं। जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसी के आधार पर हिंदी प्रदेश की अन्य उपभाषाओं को राजस्थानी, पहाड़ी, बिहारी आदि भाषा कहा था, जिनमें हिंदी के शब्दों का प्रयोग नहीं है, किंतु अन्य दो को हिंदी मानने के कारण पश्चिमी हिंदी तथा पूर्वी हिंदी कहा था। और इस प्रकार इस अर्थ में हिंदी आठ बोलियों (ब्रज, खड़ी बोली, बुंदेली, हरियाणवी, कन्नौजी, अवधी, छत्तीसगढ़ी) का सामूहिक नाम है। खड़ी बोली हिंदी का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है, लेकिन यदि उसे पश्चिमी हिंदी तथा पूर्वी हिंदी की आठ बोलियों का प्रतिनिधि मान लिया जाए तो हिंदी का उद्भव काल मोटे रूप से आठवीं

शताब्दी के लगभग ही माना जा सकता है।

हिंदी के कुछ शुरुआती रूप पाली भाषा से ही मिलने लगते हैं, फिर प्राकृत काल में उनकी संख्या और भी बढ़ गई। फिर अपभ्रंश काल में यह रूप चालीस प्रतिशत से भी अधिक के हो गए। किंतु हिंदी भाषा का वास्तविक आरंभ आठवीं शताब्दी से ही संभव हो सका।

विभिन्न साहित्यकारों द्वारा हिंदी के उद्भव एवं विकास का काल अलग-अलग माना गया। जैसे- आचार्य धीरेंद्र वर्मा के अनुसार हिंदी भाषा का उद्भव काल 1000 ई. के लगभग माना गया है, जिसे अधिकांश भाषा शास्त्री इस तथ्य से सहमत हैं। डॉक्टर पीताम्बर बड़थ्वाल यह अनुमान करते हैं कि सन 778 ई. के पहले से ही हिंदी भाषा बोली जाती रही होगी।

डॉ. रामकुमार वर्मा, महापंडित राहुल सांकृत्यायन और ठाकुर शिव सिंह सागर आदि ने तो सातवीं शती ई. की कविताओं में हिंदी भाषा के शब्दों के प्रमाण भी प्रस्तुत किए हैं।

कुछ तथ्य प्रकाश में आते हैं-

विद्वानों का एक वर्ग जिसमें डॉक्टर भोलानाथ तिवारी, डॉक्टर धीरेंद्र वर्मा, और आचार्य रामचंद्र शुक्ल आदि आते हैं, वह यह स्वीकार करते हैं कि हिंदी भाषा का उद्भव लगभग 1000 ई. से हुआ होगा।

दूसरे वर्ग के विद्वान 'उत्तर अपभ्रंश' को ही पुरानी हिंदी मानते हुए सातवीं शती ई. में हिंदी का उद्भव मानता है।

निष्कर्ष के तौर पर हम यह कह सकते हैं सातवीं शती ई. के पूर्व से ही हिंदी के कुछ व्यावहारिक रूप मिलते हैं किंतु हिंदी भाषा का व्यवस्थित रूप 1000 ई. में ही दिखाई देता है। अतः हिंदी के विकास का इतिहास लगभग 990 वर्ष पुराना है।

हिंदी भाषा का विकास

आदिकाल (1000 ई. से 1500 ई. तक)

इस काल में हिंदी के विभिन्न रूप जैसे डिंगल, पिंगल आदि हिंदी विकसित हुई। प्राकृत बोलियाँ विशेष कर ब्रज, अवधी, और खड़ी बोली जैसी लोक भाषाओं का भी विकास हुआ और इसी युग में खड़ी बोली गद्य के विकास का भी सूत्रपात हुआ।

मध्यकाल (1500 ई. से 1850 ई.)

इस काल में हिंदी भाषा की बोलियों, अवधी और ब्रज में साहित्य की रचनाएँ हुईं, तथा ब्रज भाषा का विकास हुआ और उसमें कविताएँ भी इसी काल में लिखी गईं।

आधुनिक काल (1850 ई. से वर्तमान तक)

इस काल में खड़ी बोली का प्रयोग साहित्य में बढ़ा और यह मानक रूप में विकसित हुई। गद्य की सभी विधाओं का विकास भी इसी काल में हुआ। 1947 में भारत के आजाद होने के बाद हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला और आज हिंदी भाषा देश की अधिकांश आबादी द्वारा बोली जाती है तथा यह दुनिया में सबसे ज्यादा प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में से एक है।

हिंदी भाषा के विकास के तीनों कालों में बहुत से साहित्यकार तथा कवि हुए। आदिकाल जिसमें हिंदी के प्रारंभिक रूप विकसित हुए उस काल के प्रमुख साहित्यकार थे गोरखनाथ, विद्यापति, चंदबरदाई आदि। मध्यकाल में भक्ति काल तथा रीतिकाल का विकास हुआ, इस काल के प्रमुख साहित्यकार कबीर, जायसी, सूर, तुलसीदास, मीरा, केशव, भूषण, बिहारी आदि हुए। आधुनिक काल में खड़ी बोली हिंदी का विकास हुआ और गद्य साहित्य का भी विकास इसी काल में हुआ। इस काल के प्रमुख साहित्यकार हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', और महादेवी वर्मा आदि।

हिंदी भाषा का प्रभाव:

"भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है।"[2] किसी भी देश की भाषा वहाँ के राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा सामाजिक स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। ठीक इसी प्रकार हिंदी भाषा का भी राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। यह भाषा भारत की राष्ट्रीय एकता को बढ़ाती है, अलग-अलग संस्कृतियों को आपस में जोड़ती है तथा सामाजिक संबंधों को भी मजबूत करती है।

कन्हैया लाल माणिकलाल मुंशी जी ने हिंदी के महत्त्व को जानते हुए कहा है- "हिंदी हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का शक्तिशाली और प्रधान माध्यम है।"[3] अतः हिंदी भाषा के प्रभाव को भारत के विभिन्न स्वरूपों पर देखा जा सकता है।

1. राजनैतिक-

हिंदी भाषा का राजनीतिक स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। यही एक वह भाषा है जिसे सम्पूर्ण भारत में संपर्क स्थापित कर भारत को एकता के सूत्र में बाँधकर उसे

राजनैतिक शक्ति बनाया जा सकता है। राजनैतिक विकास में हिंदी की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पंडित नेहरू ने एक सम्मेलन में कहा था- "देशभर को बांधने के लिए भारत के विभिन्न हिस्से एक दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिंदी की जरूरत है।"[4] यह भाषा भारत की राजभाषा और देश में संचार, प्रशासन और सांस्कृतिक एकता को बढ़ाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अलावा राजनेता जनता से जुड़ने तथा उन्हें प्रभावित करने के लिए भी इस भाषा का उपयोग करते हैं। हिंदी भाषा को भारतीय संविधान के द्वारा राजभाषा की मान्यता प्राप्त है, जिसका अर्थ यह हुआ कि हिंदी भाषा केंद्र सरकार और कुछ राज्य सरकारों के कामकाज की एक महत्वपूर्ण भाषा है।

यह भाषा भारत की न्याय प्रणाली, प्रशासन तथा कानून के कार्य को आसान बनाती है। हिंदी भारत में व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। यह भाषा विभिन्न प्रांतों और विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों के बीच संपर्क को आसान बनाती है। यह भाषा देश के विभिन्न हिस्सों में रह रहे लोगों को आपस में जोड़कर भारत की सांस्कृतिक एकता को भी मजबूत करती है। यह भाषा राजनेताओं को जनता से जोड़ने तथा उन तक अपना संदेश पहुँचाने तथा अपनी विचारधाराओं से उन्हें अवगत कराने का एक महत्व पूर्ण जरिया है। राजनीतिज्ञ जनता को समझने के लिए उनसे जुड़ने के लिए, उनकी समस्याओं को समझने के लिए तथा उनकी प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं, अक्सर वे अपने भाषण हिंदी में ही देते हैं जिससे वह ज्यादा से ज्यादा लोगों से जुड़ सके।

2. सांस्कृतिक-

"भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीनतम संस्कृति रही है। जब विश्व की संस्कृति घुटने टेक रही थी तब हमारी संस्कृति युवा और पुष्ट हो चुकी थी।"[5] इसका श्रेय हिंदी भाषा को जाता है जो भारत की संस्कृति में रची बची हुई है। यह भारत की विविध संस्कृतियों को जोड़ने से तथा राष्ट्र को मजबूत करने में अहम योगदान देती है। हिंदी भाषा का सांस्कृतिक प्रभाव कई रूपों में दिखता है। हिंदी साहित्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। इसमें महाकाव्य, कविताएँ, नाटक, उपन्यास और अन्य साहित्यिक रूप शामिल हैं जो भारत की विभिन्न पहलुओं जैसे की इतिहास, समाज और संस्कृति को चित्रित करता है।

संगीत के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा का बहुत महत्व है। हिंदी गीतों, लोकगीतों, और शास्त्रीय संगीत में भारत की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को हिंदी के द्वारा व्यक्त किया जाता रहा है। हिंदी भाषा भारत के सामाजिक जीवन के कई पहलुओं को भी प्रभावित करती है। यह अपने आप में धर्म, भारतीय परंपरा, रीति-रिवाज, त्योहार और अन्य बहुत

से अन्य सामाजिक गतिविधियों को अपने-आप में समेट कर भारतीय संस्कृति के विकास में अहम भूमिका निभाती है। इस भाषा के द्वारा भारत के अलग-अलग प्रांतों के लोग आपस में संवाद करते हैं, और एक दूसरे को समझने का प्रयास करते हैं, जिससे भारत की विविध संस्कृतियाँ आपस में जुड़ती हैं, और यह राष्ट्रीय एकता को बढ़ाती है।

3. सामाजिक-

सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है- "यदि माता शिक्षित होगी तो बच्चे शिक्षित होंगे और समाज शिक्षित होगा। इसके साथ-साथ समाज के सभी रूढ़िवादी मापदंड बदल जाएंगे।"[6] हिंदी भाषा भारत के समाज पर बहुत व्यापक, गहरा तथा बहु आयामी प्रभाव है। हिंदी भाषा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक संबंध स्थापित करने में, ज्ञान व संस्कृति के प्रसार में और समाज में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह भाषा न केवल संचार का माध्यम है बल्कि यह समाज की संरचना, संस्कृति, पहचान और राष्ट्र की एकता को भी मजबूत करती है। यह भाषा केवल एक भाषा नहीं यह भारतीय की भावना भी है। हिंदी भाषा एक संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है जिससे लोग एक दूसरे को समझ पाते हैं और एक दूसरे के साथ मिलकर काम कर पाते हैं या फिर उनसे संबंध स्थापित कर पाते हैं। यह भाषा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के वाहक के रूप में काम करती है तथा लोगों को साहित्य, कला, संगीत आदि से लोगों को उनकी संस्कृति से जोड़ती है, तथा उन्हें अपनी पहचान बनाने में मदद करती है। यह भाषा शिक्षा, साहित्य, विज्ञान सहित विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान प्रसार का एक माध्यम बनती है। यह लोगों को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक करती है जिससे सामाजिक परिवर्तन होता है और समाज सुधरता है। इस प्रकार यह सामाजिक परिवर्तन में बहुत अहम भूमिका निभाता है।

हिंदी भाषा का योगदान

शिक्षा-

ब्रिटिश सरकार ने लगभग 200 वर्षों तक भारत पर राज किया परंतु आज भारत दुनिया की उभरती हुई महाशक्तियों में से एक है। भारत के संविधान अनुसार की 22 भाषाएं हैं, और हिंदी उसमें मुख्य है। 2011 की भाषण जनगणना के अनुसार हिंदी कुल आबादी के लगभग 44% लोगों की मातृभाषा है। हिंदी भाषा का भारतीय शिक्षा में विशेष योगदान है। यह हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के विकास, संरचना कौशल और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है। हिंदी न केवल भारत में एक प्रमुख भाषा है अपितु यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक धाराओं के आधार पर राष्ट्रीय एकता

को भी दर्शाती है। राष्ट्रीय एकता के संबंध में पंडित नेहरू जी ने कहा है- "राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी इसमें दो राय नहीं।"[7] हिंदी भाषा बच्चों को अपनी सोच और विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता भी प्रदान करती है। यह भाषा उन्हें अपनी धरोहर से जोड़ती है। हिंदी भाषा में किसी भी विषय को अच्छे से समझना आसान हो जाता है। आज हिंदी डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

तकनीक-

आज तकनीक काफी आगे बढ़ चुकी है और हिंदी तकनीक के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है विशेष रूप से तकनीकी शिक्षा, सॉफ्टवेयर विकास और डिजिटल दुनिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। हिंदी में तकनीकी विकास और नवाचार में अपनी भूमिका को साबित किया है। कई सॉफ्टवेयर और एप्लीकेशंस अब हिंदी में भी उपलब्ध हैं जो भारतीय उपभोक्ताओं के लिए अधिक सुलभ सिद्ध होते हैं। उदाहरण के लिए फेसबुक, गूगल आदि। आजकल की डिजिटल दुनिया में हिंदी कंटेंट का प्रसार बढ़ा है, ढेर सारी वेबसाइट्स, ब्लॉग्स और शैक्षिक सामग्री अब हिंदी में भी उपलब्ध हो रही है। एआइ तकनीक में भी हिंदी का उपयोग बढ़ा है जैसे हिंदी भाषा की समझ वाले वॉइस असिस्टेंट आदि उपलब्ध हैं। हिंदी भाषा से न केवल हिंदी बोलने वाले उपयोगकर्ताओं को बल्कि समग्र तकनीकी विकास को भी लाभ हुआ है।

निष्कर्ष:

भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और व्यापक रही है, जिसने अध्यात्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, कला एवं साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह परंपरा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवनशैली, व्यवहार और सामाजिक संरचना का भी आधार बनी। इसी परंपरा से हिंदी भाषा का उद्भव और विकास जुड़ा हुआ है। हिंदी ने संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की विरासत को आत्मसात कर जनमानस की भाषा का रूप लिया। भक्ति काल में यह भाव-प्रवाह की भाषा बनी, जबकि आधुनिक युग में हिंदी ने राष्ट्रीय चेतना, साहित्यिक रचनात्मकता और प्रशासनिक कार्यों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी भाषा की विकास यात्रा एक-दूसरे की पूरक रही हैं। यह यात्रा न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनती है।

Reference:

1. हिंदी विकास और संभावना, डॉ. कैलाश चंद भाटिया, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ सं. 1
2. हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा एवं सामाजिक सांस्कृतिक संगठन, डॉ. अमरनाथ दुबे, पृष्ठ सं- 91
3. 10वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, स्मारिका, भोपाल 2015, पृष्ठ सं- 4
4. हिंदी विकास और संभावना, डॉ.कैलाश चंद भाटिया, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ सं.119
5. वैश्वीकरण के विविध आयाम, डॉ. वी. के. पांडेय, प्रकाशन- पुस्तक सदन, इलाहाबाद, पृष्ठ सं- 42
6. भारतीय शिक्षा का इतिहास, डॉ. राधाकृष्णन, विवेक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 1984, पृष्ठ सं- 35
7. हिंदी विकास और संभावना, डॉ. कैलाश चंद भाटिया, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ सं.118

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.